International Journal of Financial Management and Economics

P-ISSN: 2617-9210
E-ISSN: 2617-9229
IJFME 2024; 7(1): 396-399
www.theeconomicsjournal.com
Received: 25-02-2024
Accepted: 30-03-2024

खुशबू कुमारी
शोध–छात्रा, विश्वविद्यालय अर्थशास्त्र तिलकामाँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार, भारत

Corresponding Author:
खुशबू कुमारी
शोध–छात्रा, विश्वविद्यालय अर्थशास्त्र तिलकामाँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार, भारत

भारत में डेयरी उद्योग की स्थिति और इसका भविष्य

खुशबू कुमारी

DOI: https://doi.org/10.33545/26179210.2024.v7.i1.321

सारांश
भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में पशुपालन की भूमिका को देखते हुए, "ऑपरेशन फ्लड" के माध्यम से दुग्ध के उत्पादन को बढ़ाने की आवश्यकता पर काफी ध्यान दिया गया है। दुग्ध उद्योग अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। स्वतन्त्रता के बाद हरित क्रांति और श्वेत क्रांति दो प्रमुख क्रांतियाँ थी, जिनके कारण भारत की आर्थिक स्थिति में बड़े परिवर्तन आये। डेयरी उद्योग हरित क्रांति से निकली विस्तृत शाखाओं में से एक है। यह एक कृषि आधारित उद्योग है, जो दुनिया भर में तेजी से विस्तार कर रहा है। एक दशक पहले डेयरियों में केवल 5 प्रतिशत दूध ही आता था, जबकि आज यह 10 प्रतिशत है और यह लगातार बढ़ रहा है। दुग्ध और उसके उत्पाद पशुधन क्षेत्र के कुल उत्पादन के मूल्य का लगभग दो–तिहाई हिस्सा हैं। यह राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद में कृषि क्षेत्र में सबसे बड़ा योगदानकर्ता भी है। डेयरी क्षेत्र लगभग 68,000 करोड़ का राजस्व उत्पन्न कर रहा है, जो कि सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 5.1 प्रतिशत और कृषि सकल घरेलू उत्पाद का 30 प्रतिशत है। अंतर्राष्ट्रीय बाजार में भारत का अपना विशेष स्थान है और यह विश्व में सबसे बड़ा दुग्ध उत्पादक और दुग्ध उत्पादों का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश है। संयोग से भारत विश्व में सबसे कम खर्च पर यानी 27 सेंट प्रति लीटर की दर से दूध का उत्पादन करता है । यदि वर्तमान रूझान जारी रहता है तो मिनरल वाटर उद्योग की तरह दुग्ध प्रोसेसिंग उद्योग में भी बहुत तेजी से विकास होने की पर्याप्त संभावनाएं हैं। अगले 10 वर्षों में तिगुनी वृद्धि के साथ भारत विश्व में दुग्ध उत्पादों को तैयार करने वाला अग्रणी देश बन जाएगा।

कुटशब्दः पशुपालन, अर्थव्यवस्था, हरित क्रांति, श्वेत क्रांति, पशुधन क्षेत्र, अग्रणी

प्रस्तावना
भारतीय अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से एक कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था है। जिसमें 70 प्रतिशत से अधिक लोग गांवों में रहते हैं और कृषि तथा संबद्ध गतिविधियों जैसे पशुधन और डेयरी उद्योग पर निर्भर हैं। कुल कृषि क्षेत्र में पशुधन उत्पाद का अनुमानित हिस्सा लगभग 30 प्रतिशत है। भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में पशुपालन की भूमिका को देखते हुए, "ऑपरेशन फ्लड" के माध्यम से दुग्ध के उत्पादन को बढ़ाने की आवश्यकता पर काफी ध्यान दिया गया है। दुग्ध उद्योग अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान रखता है, क्योंकि दुग्ध चावल के बाद जीएनपी में योगदान देने वाला दूसरा सबसे बड़ा कृषि उत्पाद है। हालांकि, पशुपालन और डेयरी उद्योग में योजनागत निवेश कृषि का केवल 5 प्रतिशत है। लेकिन वर्तमान में राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड ने बड़ी संख्या में सहकारी समितियों की स्थापना की है।

देश की स्वतन्त्रता के बाद हरित क्रांति और श्वेत क्रांति दो प्रमुख क्रांतियाँ थी, जिनके कारण भारत की आर्थिक स्थिति में बड़े परिवर्तन आये। डेयरी उद्योग हरित क्रांति से निकली विस्तृत शाखाओं में से एक है। यह एक कृषि आधारित उद्योग है, जो दुनिया भर में तेजी से विस्तार कर रहा है। एक दशक पहले डेयरियों में केवल 5 प्रतिशत दूध ही आता था, जबकि आज यह 10 प्रतिशत है और यह लगातार बढ़ रहा है। कृषि मंत्रालय की हालिया रिपोर्ट से पता चलता है कि डेयरी उद्योग में प्रति वर्ष लगभग 4.2 करोड़ नौकरियों की पेशकश करने की क्षमता है। राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि के परिणामस्वरूप दुग्ध उत्पादों की मांग में वृद्धि होगी। मांग को पूरा करने के लिए दुग्ध उत्पादन में लगातार वृद्धि होना आवश्यक है, जो "ऑपरेशन फ्लड" के सफल कार्यान्वयन और विकास तथा नई पशु नस्ल पर संभव होगा ।

भारत दुग्ध उत्पादन में प्रथम स्थान पर है। यहां विश्व उत्पादन का 18.5 प्रतिशत दुग्ध उत्पादन होता है। भारत में वर्ष 2014–15 के दौरान 146.3 मिलियन टन का वार्षिक दुग्ध उत्पादन हुआ था जबकि वर्ष 2013–14 के दौरान 137.69 मिलियन टन हुआ और इस अवधि में 6.26 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। यह वृद्धि मुख्य रूप से 'ऑपरेशन फ्लड' परियोजना के सफल कार्यान्वयन के

कारण हुई है। दुग्ध और उसके उत्पाद पशुधन क्षेत्र के कुल उत्पादन के मूल्य का लगभग दो–तिहाई हिस्सा हैं। यह राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद में कृषि क्षेत्र में सबसे बड़ा योगदानकर्ता भी है। डेयरी क्षेत्र लगभग 68,000 करोड़ का राजस्व उत्पन्न कर रहा है, जो कि सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 5.1 प्रतिशत और कृषि सकल घरेलू उत्पाद का 30 प्रतिशत है। देश के सकल घरेलू उत्पाद में सिर्फ दुग्ध उद्योग का योगदान 450 बिलियन रूपये है। दिलचस्प बात यह है कि पिछले कुछ वर्षों में सकल घरेलू उत्पाद में पशुपालन का हिस्सा बढ़ रहा है, जबकि कृषि का हिस्सा घट रहा है। यह भारतीय अर्थव्यवस्था में डेयरी के बढ़ते महत्व का पूरी तरह से समर्थन करता है।

भारत एक ऐसा राष्ट्र है, जो आजादी के 75 वर्ष बाद भी गरीबी से जूझ रहा है। यह मुख्य रूप से एक ओर कृषि कार्यों की निम्न उत्पादकता और दूसरी ओर जनसंख्या के विस्फोट के कारण है। गरीबी उन्मूलन हमेशा योजना बनाने का प्रमुख उद्देश्य रहा है। SGSY, PMGY, REGP, PMRY, PMGKY, IRDP, NREP, RLEGP और TRYSEM आदि जैसे गरीबी–विरोधी रोजगारपरक कार्यक्रम प्रत्यक्ष हस्तक्षेप पर निर्भर करते हैं। इन संबद्ध कार्यक्रमों ने पशु पालन, मुर्गी पालन, मछली पालन और वानिकी उत्पादों के उत्पादन की संभावनाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। तीन उप–क्षेत्र अर्थात् पशुपालन, मछली पालन और वानिकी राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में आय का योगदान करने के अलावा ग्रामीणों को सहायक व्यवसाय और आय प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका रहे हैं। पशुपालन गतिविधियाँ कृषि के साथ–साथ प्रमुख गतिविधि और सहायक गतिविधि दोनों ही रूपों में महत्वपूर्ण हैं। डेयरी उद्योग कृषि में महत्वपूर्ण योगदान देने के साथ रोजगार के लाभकारी अवसर भी पैदा करता है, जिससे ग्रामीण बेरोजगारी कम होती है ।

भारत विश्व में दुग्ध का सबसे बड़ा उत्पादक देश है। यहां डेयरी उद्योग कृषि अर्थव्यवस्था का एक अनिवार्य हिस्सा है। डेयरी उद्योग राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में किसी भी अन्य कृषि उत्पाद की तुलना में सबसे अधिक योगदान देता है। छोटे और सीमांत किसान और भूमिहीन मजदूर अपनी आजीविका के लिए काफी हद तक डेयरी उद्योग पर निर्भर करते हैं। देश में लगभग 70 मिलियन ग्रामीण परिवार (मुख्य रूप से, छोटे और सीमांत किसान और भूमिहीन मजदूर) दूध उत्पादन में लगे हुए हैं। ये देश का लगभग 70 प्रतिशत दुग्ध का उत्पादन करते हैं। बिहार राज्य में भी, दुग्ध उत्पादन छोटे और सीमांत किसानों की आय का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। छोटे जोत वाले डेयरी किसान कुल दुग्ध का लगभग 80 प्रतिशत उत्पादन करते हैं। पशुपालन, डेयरी उद्योग और मत्स्य पालन विभाग (2006, 2019) के अनुसार भारत में कुल दुग्ध उत्पादन में बिहार का हिस्सा 2001–02 में 3.2 प्रतिशत से बढ़कर 2018–19 में 5.2 प्रतिशत हो गया। अनुकूल नीतिगत वातावरण (नस्ल सुधार और दुग्ध विपणन प्रणाली के विकास) के कारण पिछले दो दशकों में दुग्ध उत्पादन में लगातार वृद्धि हुई है। पशुपालन, डेयरी और मत्स्य पालन विभाग (2019) के अनुसार राज्य में दूध उत्पादकता केवल 4.5 लीटर है, जो राष्ट्रीय औसत 5.1 लीटर से बहुत कम है, और इस भिन्नता का कारण दुग्ध के स्रोत की भिन्नता है। राज्य के सभी जिलों में दुग्ध उत्पादन का स्थानिक वितरण असमान है। बिहार अभी दूध उत्पादन के मामले में देश के शीर्ष 10 राज्यों में शामिल है। राज्य में लगभग 20 लाख लीटर दूध का उत्पादन हो रहा है। देश में सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन के एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में इसे मान्यता दी गई है। कृषि और डेरी फार्मिंग के बीच एक परस्पर निर्भरता वाला संबंध है। कृषि उत्पादों से मवेशियों के लिए भोजन और चारा उपलब्ध होता है। जबकि मवेशी पोषण सुरक्षा माल उपलब्ध कराने के साथ–साथ विभिन्न प्रकार के दुग्ध उत्पादों दूध, घी, मक्खन, पनीर, संघनित दूध, दूध का पाउडर, दही आदि का उत्पादन करता है।

अंतर्राष्ट्रीय बाजार में भारत का अपना विशेष स्थान है और यह विश्व में सबसे बड़ा दुग्ध उत्पादक और दुग्ध उत्पादों का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश है। संयोग से भारत विश्व में सबसे कम खर्च पर यानी 27 सेंट प्रति लीटर की दर से दूध का उत्पादन करता है (अमरीका में 63 सेंट और जापान में 2.8)। यदि वर्तमान रूझान जारी रहता है तो मिनरल वाटर उद्योग की तरह दुग्ध प्रोसेसिंग उद्योग में भी बहुत तेजी से विकास होने की पर्याप्त संभावनाएं हैं। अगले 10 वर्षों में तिगुनी वृद्धि के साथ भारत विश्व में दुग्ध उत्पादों को तैयार करने वाला अग्रणी देश बन जाएगा। लगभग 15 साल पहले अमेरिका को पछाड़कर भारत दुनिया का सबसे बड़ा दूध उत्पादक (2014–15 में 140 मिलियन टन) बन गया। भारत का दूध उत्पादन वैश्विक दूध उत्पादन का 18.5% है, जिसमें से अधिकांश की खपत घरेलू स्तर पर होती है। वैश्विक व्यापार में भारत की हिस्सेदारी <1% है। भारत में प्रति व्यक्ति दूध की उपलब्धता 289 ग्राम प्रतिदिन है। मजबूत घरेलू मांग के समर्थन से, 2017 में प्रति व्यक्ति दूध की उपलब्धता 336 ग्राम प्रति दिन तक पहुंचने का अनुमान है।

सालाना लगभग 10% की दर से बढ़ते हुए, भारतीय डेयरी उद्योग मुख्य रूप से असंगठित क्षेत्र द्वारा नियंत्रित है, जिसकी हिस्सेदारी लगभग 85% (एसोचौम) है। भारत भर में लगभग आठ करोड़ ग्रामीण परिवार डेयरी उत्पादन में लगे हुए हैं और ग्रामीण बाजार कुल उत्पादित दूध का आधे से अधिक उपभोग करता है। भारतीय डेयरी सेक्टर सालाना 4.5% की दर से बढ़ रहा है। उत्तर प्रदेश (23.33 मिलियन टन दूध), राजस्थान (13.94 मिलियन टन), आंध्र प्रदेश (12.76 मिलियन टन), गुजरात (10.31 मिलियन टन), पंजाब (9.71 मिलियन टन), मध्य प्रदेश (8.84 मिलियन टन), महाराष्ट्र, बिहार, हरियाणा वर्ष 2015 के लिए भारत में अग्रणी दूध उत्पादक राज्य हैं। 2020 में भारत में दूध का उत्पादन लगभग 191 मिलियन टन तक पहुंच गया है। 2010–11 में डेयरी उद्योग का बाजार आकार 2,92,067 करोड़ था, जो 2017 में 7,10,596 करोड़ तक पहुंच गया है। गैर–वसा वाले सूखे दूध (एनएफडीएम) के 2014 में 4,89,000 टन तक पहुंच गया है। संयुक्त मक्खन और घी (स्पष्ट मक्खन) 4.88 मिलियन टन तक पहुंच गयी थी।

दुधारू पशु – भारतीय संपत्ति

भारत में कुछ उत्कृष्ट नस्लें हैं। मवेशियों में साहीवाल, राठी, गिर और लाल सिंधी दूध उत्पादक के रूप में सामने आते हैं। भैंस के लिए, स्थान का गौरव मुर्रा, मेहसानी और जाफरबाड़ी को जाता है। भारत में दुनिया में सबसे अधिक मवेशी (185.2 मिलियन, 2.1 किलोग्राम डेयरी उपज/पशु जो कुल दूध उत्पादन में 38% योगदान देता है) और भैंसों की आबादी (97.9 मिलियन, 2.6 किलोग्राम डेयरी उपजध्पशु जो कुल दूध उत्पादन में 54% योगदान देता है) हैं। भारत में सभी गोजातीय आबादी में से, 40% स्वदेशी गायें हैं, 46% भैंस हैं और 14% आयातित यूरोपीय या उत्तरी अमेरिकी संकर नस्ल के मवेशी हैं (6.9 किलोग्राम दैनिक उपज/पशु)। भारतीय औसत दूध उत्पादन प्रति दुधारू पशु मात्र 1380 लीटर है। बनाम विश्व औसत के लिए 2350 लीटर/पशु/वर्ष। भारत में दुनिया की 50% भैंसें और दुनिया की 20% मवेशी आबादी है। 67% से अधिक डेयरी पशुओं का स्वामित्व सीमांत और छोटे किसानों के पास है। देश में उत्पादित कुल दूध में भैंस के दूध की हिस्सेदारी सबसे बड़ी (54%) हैय इसके बाद संकर नस्ल (24%) और स्वदेशी मवेशी (22%) का स्थान आता है।

दूध उत्पादन मात्रा के हिसाब से 7% और मूल्य के हिसाब से लगभग 5% बढ़ रहा है। इस प्रगति का श्रेय मुख्य रूप से डेयरी सहकारी समितियों के आगमन के कारण भारतीय डेयरी उद्योग (आईडीआई) में आए संरचनात्मक परिवर्तनों को दिया जाता है।

2015 में भारतीय डेयरी उद्योग का बाजार आकार 100 बिलियन अमेरिकी डॉलर था।

भारत में दूध प्रसंस्करण कुल उत्पादित दूध का 35% है। इसमें से, संगठित डेयरी उद्योग उत्पादित दूध का 13% हिस्सा है, जबकि बाकी दूध या तो फार्म स्तर पर खपत किया जाता है, या असंगठित चौनलों के माध्यम से ताजा, बिना पाश्चुरीकृत दूध के रूप में बेचा जाता है।

दुग्ध उत्पाद एवं दूध का आवंटन की स्थिति

भारत में, लगभग 60% दूध का उपयोग तरल रूप में किया जाता है, जबकि शेष 40% का उपयोग मक्खन, स्पष्ट मक्खन (देसी घी), पनीर, दही, पनीर, आइसक्रीम, डेयरी व्हाइटनर और पारंपरिक मिठाइयों के रूप में किया जाता है। उत्पादित दूध का 40% स्वंय उपयोग या उपभोग में लाया जाता है और 60% बेच दिया जाता है। बेचे जाने वाले दूध का 70% असंगठित क्षेत्र से और केवल 30% संगठित क्षेत्र से जाता है।

भारत में उत्पादित कुल दूध का लगभग 50% पारंपरिक भारतीय डेयरी उत्पादों में परिवर्तित हो जाता है।

भारत में दूध की खपत में वृद्धि को प्रभावित करने वाले कारक

- जनसंख्या वृद्धि
- प्रयोज्य आय में वृद्धि के कारण अधिक सामर्थ्य
- खुदरा और खाद्य सेवा क्षेत्रों के माध्यम से डेयरी उत्पादों के बारे में जागरूकता और उपलब्धता बढ़ाना
- उच्च प्रोटीन आहार में उपभोक्ताओं की रुचि बढ़ी

डेयरी उद्योग के स्थिर विकास में बाधा डालने वाले कारक

- दुधारू पशुओं की कम उत्पादकता (अर्थात् 987 किग्राध्वर्ष बनाम विश्व औसत 2200 किग्रा/वर्ष)
- कीमतों में उछाल,
- कोल्ड स्टोरेज जैसे उचित बुनियादी ढांचे का अभाव
- पारदर्शी दूध मूल्य निर्धारण प्रणाली का अभाव
- चारे की कमी के कारण मवेशियों से कम पैदावार होती है

बिहार में डेयरी की स्थिति

बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि और डेयरी उद्योग मनुष्य के जीवन के अविभाज्य अंग रहे हैं। क्योंकि डेयरी से ग्रामीण लोगों को अतिरिक्त रोजगार के साथ अतिरिक्त आय होती है। बिहार में 2032–33 तक दूध के खपत में 132 प्रतिशत वृद्धि का अनुमान है। राज्य में 2017–18 में दूध का खपत 900 करोड़ लीटर था जो 2032–33 में बढ़कर 2130 करोड़ लीटर होने का अनुमान है। जबकि दूध के उत्पादन में मात्र 86 प्रतिशत वृद्धि का अनुमान है। राज्य में 2017–18 में दूध का उत्पादन 896 करोड़ लीटर था जो 2032–33 में बढ़कर 1670 करोड़ लीटर होने का अनुमान है। बिहार में, दूध की प्रति व्यक्ति उपलब्धता वर्ष 2010–11 के दौरान 184 ग्राम/दिन से बढ़कर 2018–19 के दौरान 251 दूध के ग्राम/दिन हो गई है। बिहार में उत्पादन में वृद्धि की पर्याप्त संभावनाएं हैं। सहकारी समितियों के माध्यम से अधिक से अधिक दूध उपार्जित करने के लिए राज्य में आधारभूत सुविधाओं में सुधार के प्रयास भी किए जा रहे हैं। भूमि पर बढ़ते दबाव के साथ, अकेले कृषि बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों में सभी को लाभकारी रोजगार प्रदान नहीं कर सकती है। इसलिए पशुपालन और डेयरी जैसी संबद्ध गतिविधियों को आय के पूरक और ग्रामीण क्षेत्रों में कमजोर वर्गों के लोगों को रोजगार प्रदान करने के लिए सामाजिक परिवर्तन के प्रभावी साधन रूप में देखा जाना चाहिए।

बिहार के विभिन्न जिलों में बेगूसराय जिला दुग्ध उत्पादन में अग्रणी स्थान रखता है। इसलिए अध्ययन के लिए बेगूसराय जिले का चयन किया गया है। बेगूसराय जिला मूल रूप से कृषि आधारित और यहां लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है। यह गंगा नदी के तट पर स्थित है। यह डेयरी उद्योग के लिए व्यापक गुंजाइश प्रदान करता है। दुग्ध के उत्पादन और विपणन से संबंधित कई अध्ययन हुए हैं। लेकिन डेयरी उद्योग के आर्थिक और वित्तीय विश्लेषण पर अध्ययन का अभाव है। इसलिए, वर्तमान अध्ययन "डेयरी उद्योग का आर्थिक और वित्तीय विश्लेषण" बेगूसराय जिले के गंगा डेयरी लिमिटेड के संदर्भ में किया गया है।

निष्कर्ष

- भारत में कुछ उत्कृष्ट नस्लें हैं। गाय में साहीवाल, राठी, गिर और लाल सिंधी और भैंस में मुर्रा, मेहसानी और जाफरबाड़ी
- भारत में, लगभग 60% दूध का उपयोग तरल रूप में किया जाता है।
- 40% का उपयोग मक्खन, स्पष्ट मक्खन (देसी घी), पनीर, दही, पनीर, आइसक्रीम, डेयरी व्हाइटनर और पारंपरिक मिठाइयों के रूप में किया जाता है।
- उत्पादित दूध का 40% स्वंय उपयोग या उपभोग में लाया जाता है और 60% बेच दिया जाता है।
- बेचे जाने वाले दूध का 70% असंगठित क्षेत्र से और केवल 30% संगठित क्षेत्र से जाता है।
- उत्पादित कुल दूध का लगभग 50% पारंपरिक भारतीय डेयरी उत्पादों में परिवर्तित हो जाता है।
- दूध उत्पादन मात्रा के हिसाब से 7% और मूल्य के हिसाब से लगभग 5% बढ़ रहा है।
- बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि और डेयरी उद्योग मनुष्य के जीवन के अविभाज्य अंग रहे हैं। क्योंकि डेयरी से ग्रामीण लोगों को अतिरिक्त रोजगार के साथ अतिरिक्त आय होती है।
- बिहार राज्य में भी, दुग्ध उत्पादन छोटे और सीमांत किसानों की आय का एक महत्वपूर्ण स्रोत है।
- राज्य में 2017–18 में दूध का खपत 900 करोड़ लीटर था जो 2032–33 में बढ़कर 2130 करोड़ लीटर होने का अनुमान है।
- दूध के उत्पादन में मात्र 86 प्रतिशत वृद्धि का अनुमान है। राज्य में 2017–18 में दूध का उत्पादन 896 करोड़ लीटर था जो 2032–33 में बढ़कर 1670 करोड़ लीटर होने का अनुमान है।
- बिहार में 2032–33 तक दूध के खपत में 132 प्रतिशत वृद्धि का अनुमान है।

सुझाव

- **उत्पादकता में वृद्धिः** पशुओं की उत्पादकता बढ़ाने, बेहतर स्वास्थ्य देखभाल और प्रजनन सुविधाओं और डेयरी पशुओं के प्रबंधन की आवश्यकता है। इससे दूध उत्पादन की लागत कम हो सकती है।
- साथ ही पशु चिकित्सा सेवाओं, कृत्रिम गर्भाधान (Artificial nsemination- Al), चारा और किसान शिक्षा की उपलब्धता सुनिश्चित करके दूध उत्पादन और उत्पादकता को बढ़ाया जा सकता है। सरकार और डेयरी उद्योग इस दिशा में अहम भूमिका निभा सकते हैं।
- **उत्पादन, प्रसंस्करण और विपणन बुनियादी ढा ंचे में वृद्धिः** यदि भारत को डेयरी निर्यातक देश के रूप में उभरना है, तो उचित उत्पादन, प्रसंस्करण और विपणन बुनियादी ढांचे को विकसित करना अनिवार्य है, जो अंतर्राष्ट्रीय गुणवत्ता आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम है।

- गुणवत्ता और सुरक्षित डेयरी उत्पादों के उत्पादन के लिये एक व्यापक रणनीति की आवश्यकता है। इसके लिये उपयुक्त कानूनी ढांचा भी बनाना चाहिये।
- ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे की कमी को दूर करने और बिजली की कमी को दूर करने के लिये, सौर ऊर्जा संचालित डेयरी प्रसंस्करण इकाइयों में निवेश करने की आवश्यकता है।
- डेयरी सहकारिता को मजबूत करने की जरूरत है। इस प्रयास में, सरकार को किसान उत्पादक संगठनों को बढ़ावा देना चाहिये।
- कृषि की तरह पशुपालन साख मुहैया कराया जाना चाहिए। खस तक किसानों की पहुँच सरल और आसान बनाया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ

1. एम. के तिवारी प्रोफिटेबल मिल्क बिजनेस थ्रू डेयरी को–ऑपरेटिव एग्रीकल्चर एक्सटैंशन रिव्यू 13(3), मई–जून, 2001, पृ. 20–22
2. एच. चन्द्रारी एवं जे. एस. पवार डेयरी को–ऑपरेटिव सोसाइटीज परसेप्शसन ऑफ मिल्क प्रोड्यूसर्स सोशल चेंज 34(3), 2004 पृ0 53–63
3. यू एम शाह डेयरी डवलपमैंट इन इंडियाः को–ऑपरेटिव शो द वे फरवरी, 2007 वॉल्यूम 44 नं. 8 पृ. 342
4. डी डब्लू एटवुड एव ंबी एस बाविस्कर हू शेयश को–ऑपरेटिव एण्ड रूरल डवलपमेंट नई दिल्ली ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1998, पृ. 328–391
5. वी के. दूबे ग्रामीण अर्थव्यवस्था के सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन में डेयरी समितियाँ' अक्टूवर 1995 खंड 34 नं. 4 पृ. 2–113
6. रंजीत कुमार एवं ए. के शर्मा, नालंदा जिले में ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर डेयरी सहकारी समितियों का प्रभाव– एक केस स्टडी' भारतीय सहकारी समीक्षा, जनवरी 1999 खंड 36 नं. –3 पृ. 201–208
7. बी. सुब्बालक्ष्मी'' डेयरी फार्मिंग की लाभप्रदताः एक केस स्टडी किसान विश्व जनू 1998 खंड 25 न. 6 पृ. 35–37
8. सी कृष्णन ''ग्रामीण विकास के लिए डेयरीः एक अध्ययन जर्नल ऑफ रूरल डवलपमेंट जुलाई–सितंबर 1997 खंड 16 नं. 3 पृ. 387–400